मज़हबी तअस्सुब

भाग µ ३

विसमादु नाद विसमादु वेद ।। **विसमादु जीअ विसमादु भेद ।।**
विसमादु रूप विसमादु रंग ।। (पृ. 463)

मेरै प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ ।।
कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ।। (पृ. 1056)

गुरबाणी की उपरोक्त पंक्तियों अनुसार भिन्नता तथा अनेकता प्रकृति का सम्पूर्ण तथा **जरूरी श्रृंगार है।** स्थूल शारीरिक स्तर पर प्रत्येक वस्तु सीमित है, परन्तु फिर भी नैन&नक्श, कद, सेहत, रंग आदि **शारीरिक** बनावट में अत्यन्त **'भिन्नता'** है। इसी प्रकार मनुष्य की सोच&विचार, भावना तथा निर्णय शक्ति में भी **सूक्ष्म मानसिक स्तर पर अत्यन्त भिन्नता तथा विलक्षणता है।** इसी भिन्नता के कारण ही, इन बाहरी मज़हबों **में,** तथा एक ही मज़हब के अलग&अलग **फिरकों में** —

मत भेद
वाद&विवाद
ईर्ष्या&द्वेष
जलन
घृणा
झगड़े
लड़ाईयाँ
खून&खराबा
अत्याचार

होते रहते हैं, जिस कारण, **'धर्म या मज़हब' बदनाम होते हैं।** इसका भयावह तथा दुखदायी परिणाम यह भी है कि **जिस उद्देश्य या मंतव्य के लिए 'धर्म' की रचना की गयी 'नतीजा' उसके ठीक विपरीत निकला।**

साधारण जनता तो, 'जीवन' को —

ऊँचा

सुखद

सुहाना

आरामदायक

सुख शान्ति वाला

कल्याणकारी

बनाने के लिए, या निजी स्वार्थ के लिए, **'धर्म' या 'मज़हब' अपनाती है। परन्तु जब मज़हब को 'तअस्सुब' का रंग चढ़ जाता है, तब —**

मज़हब के नाम पर —

लड़ाई

झगड़े

खून-ख़राबा

भयानक तबाही

अत्याचार

को देख कर, जनता के निश्चय तथा श्रद्धा-भाव को **चोट लगती है** तथा उनके मन में **'ईश्वर' व 'धर्म' के विषय में शंका पैदा हो जाती है।** कई लोगों का तो 'ईश्वर' से **विश्वास ही उठ जाता है** तथा **वे नास्तिक हो जाते हैं।**

मज़हब के नाम पर एक दूसरे से नफरत, अलग-अलग धर्मों के बीच ही नहीं, अपितु **एक ही 'धर्म' के भिन्न-भिन्न फिरकों के बीच भी, पैदा हो जाती है,** जिससे आपस में **वैर-विरोध तथा टकराव बढ़ता जाता है। जो भयानक बरबादी तथा अत्याचार का रूप धारण कर लेता है।**

जैसे नेत्रहीन व्यक्तियों का हाथी के विषय में ज्ञान अधूरा तथा ऊपरी सा होने के कारण, प्रत्येक अन्धा, हाथी को वही कुछ समझे हुए था जितना कि उसने हाथी

को हाथ से टटोल कर जाना था। यूँ इस **अधूरे ज्ञान के आधार पर, वह आपस में लड़ते तथा झगड़ते रहे । उसी प्रकार —**

परमात्मा

आत्मा

माया

गुरू

संत

साधू

धार्मिक विचारधारा

धार्मिक सेवा

कुरबानी

सिमरन

कल्याण

मुक्ति

आदि सम्बंधी, हमारी समझ या ज्ञान भी, **ऊपरी सा, अधूरा तथा गलत हो सकता है ।**

इस अधूरे या गलत ज्ञान के कारण ही **मज़हबी संकीर्णता का बीज उत्पन्न होता तथा बहुत तेजी से फैल जाता है।** इस अधूरे ज्ञान या बेसमझी से उत्पन्न हुए —

झगड़े

लड़ाईयाँ

द्वैष

नफरत

धक्केशाही

अत्याचार

अपने तथा बेगानों, सब पर किये जाते हैं ।

इस प्रकार 'मज़हबी तअस्सुब' की 'जड़' का **मूल कारण**, हमारी ना समझी तथा अज्ञानता ही है। क्योंकि हमारा मज़हब या धर्म सम्बंधी ज्ञान —

अधूरा
गलत तथा
एकतरफा होता है।

इसी कारण **मज़हबी संकीर्णता** जैसा **'असाध्य रोग'** या **'कैंसर'**(cancer) संसार में फैल रहा है।

गुरबाणी के वचन—

घाटि न किन ही कहाइआ ।। सभ कहते है पाइआ ।। (पृ. 71)
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ।। (पृ. 469)

अनुसार, सूक्ष्म 'अहम' कारण, प्रत्येक मनुष्य यह सोचता है कि उस का—

ईश्वर
गुरू
सिद्धान्त
विचारधारा
कर्म
धर्म
मर्यादा
भक्ति

सम्बंधी—

सम्झ
ज्ञान
निश्चय
कर्मक्रिया
पाठपूजा

ही—

त्रुटिरहित
अटल तथा
सम्पूर्ण है।

वह दूसरों के निश्चय तथा कर्म/धर्म, अधूरे तथा गलत समझता है।

इस अहम् के भ्रम/भुलाव की **अज्ञानता में**, मनुष्य दूसरों पर, **अपना धर्म 'ठूसने'** के लिए, **हर उचित व अनुचित तरीके प्रयोग करता है।**

अहम् के भ्रम/भुलाव में अपनाये हुए फोकट-कर्मों का एक छोटा सा उदाहरण यहाँ दिया जाता है।

पानी — 'ईश्वर' की देन' है। परन्तु वही पानी हमारे अपने बर्तन में पड़ा हो, तो वह 'सुच्चा' होता है। परन्तु जब किसी दूसरे के बर्तन में पड़ा हो तो **सुच्चा नहीं माना जाता।** उस बर्तन को किसी दूसरे का हाथ लग जाये, तब उस में पड़ा पानी भी **जूठा हो जाता है।** यदि वही पानी 'काँच' के गिलास में पड़ा हो, तब वह **'पलीत' हो जाता है,** जिसे हम पीने के लिए तैयार नहीं। परन्तु यदि 'स्टील' (Steel) के बर्तन में पड़ा हो, तब **'सुच्चा'** माना जाता है!

कितनी अनोखी बात है कि पानी या चाय—

दूसरे के बर्तन में,
हाथ लगने से,
काँच के बर्तन में,
चीनी के कप में,

'जूठी' हो जाती है परन्तु 'दूध' या 'घी' 'जूठा' नहीं होता। क्योंकि यह सबके हाथों या सारे बर्तनों या डिब्बों में से प्रयोग किया जाता है।

घिअ पट भांडा कहै न कोइ ।। ऐसा भगतु वरन महि होइ ।। (पृ. 721)

इसी प्रकार के अन्य अनेक धार्मिक संकीर्णता के बरताव तथा प्रकटाव हमारे देश में, किसी/न/किसी रीति या रूप में प्राय दिखायी देते हैं, जिसका सबको ज्ञान होते हुए भी, इस हास्यप्रद 'संकीर्णता' की **'कट्टरता' में से निकलने का कभी ख्याल या साहस नहीं होता।**

दे कै चउका कढी कार ।। उपरि आइ बैठे कूड़िआर ।।
मतु भिटै वे मतु भिटै ।। इहु अंनु असाडा फिटै ।।
तनि फिटै फेड़ करेनि ।। मनि जूठै चुली भरेनि ।।
कहु नानक सचु धिआईऐ ।। सुचि होवै ता सचु पाईऐ ।। (पृ. 472)

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि

पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ।

कारी कढी किआ थीऐ जां चारे बैठीआ नालि ।।

सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ।।

नानक अगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ।। (पृ. 91)

कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ।। जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ।। .....

अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ।।

जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ ।।

गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ।।

कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ।। (पृ. 1195)

अहम् के प्रकटाव के अनेक स्वरूप है, परन्तु जब कभी **'अहम्' को 'धर्म' की 'पर्त' चढ़ जाये, तब अत्यन्त बरबादी होती है।**

पिछले भागों में बताया जा चुका है कि 'मज़हबी तअस्सुब' द्वारा, संसार में ईर्ष्या, द्वेष, **नफरत का अत्यन्त गहरा तथा घातक 'ज़हर' फैला हुआ है।** जिस कारण अनगिनत लड़ाई, झगड़े, तबाही, अत्याचार निर्दोष तथा भोली-भाली जनता पर **ढाहे गये हैं** तथा आज भी हो रहे हैं। जब यह 'मज़हबी तअस्सुब' — **'संगठित'** (organised) हो जाता है, तब लोग **इसके अन्धे जोश में अत्यन्त तबाही मचाते हैं व जनता त्राहि-त्राहि कर उठती है।**

दूसरों को —

नीचा

मलेच्छ

काफिर

कच्चा पिल्ला

मनमुख

आदि कहकर **नुक्ताचीनी** करनी तथा **उनसे धर्म के नाम पर Ñ**

घृणा करनी

द्वेष करना

वाद&विवाद करना

झगड़े करना

लड़ाई करनी

लूटमार करनी

तबाही मचानी

अत्याचार करने

आदि Ñ **'मज़हबी तअस्सुब' के अधीन — हमारे 'अहम्' का ही प्रकटाव है।**

दूसरी ओर अपने आप को —

अच्छा

नेक

उच्च

पवित्र

सच्चा

धर्मी

भला&भद्र

पारगामी

महापुरुष

ब्रहम ज्ञानी

समझना **भी धार्मिक 'अहम्' का ही प्रकटाव है।**

परन्तु, गुरबाणी हमें इस धार्मिक अहम् से यूँ **रोकती है** —

इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ।।

हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ।।

गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ।।

साची बाणी सबद बीचारु ।। (पृ. 158)

नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ।। (पृ. 1411)

मन महि क्रोधु महा अहंकारा ।।

पूजा करहि बहुतु बिसथारा ।।

करि इसनानु तनि चक्र बणाए ।।

अंतर की मलु कब ही न जाए ।। (पृ. 1348)

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ।।
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ।। (पृ. 1428)

मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ।। (पृ. 51)

कोटि करम करै हउ धारे ।।
स्रमु पावै सगले बिरथारे ।। (पृ. 278)

उपरोक्त विचार से सिद्ध हुआ, कि Ñ

हमारा 'अहम्' ही
धार्मिक अभिमान
तथा
मज़हबी तअस्सुब

का **मूल कारण है।**

इस **'धार्मिक जुनून' के अन्धे जोश में ही धर्म के नाम पर तथा धर्म की आड़ में,** हम धर्म का ही

निरादर
निंदा
विमुखता
अ विश्वास
बदनामी

का **अनजाने ही 'प्रदर्शन' करते हैं ।**

हमारे इस **अन्धे 'मज़हबी जुनून'** का साधारण जनता पर अत्यंत **बुरा, हानिकारक तथा गहरा प्रभाव पड़ता है।** इस से **'ईश्वर के अस्तित्व'** तथा **'धर्म' के विषय** में कई प्रकार की **शंकाएं खड़ी हो जाती है।** सत्य तो यह है, कि जनता के हृदय में **'धर्म' की ओर से 'बेपरवाही', 'विमुखता', 'अविश्वास'** तथा **'नास्तिकता'** फैलाने में, अहम्मयी **मज़हबी जुनून का ही मुख्यतः योगदान है।**

'अंधे मज़हबी जोश' में हमारी **बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है** तथा हमें **अच्छे/बुरे, सच/झूठ, पाप/पुन्य, 'दैवीय गुण' तथा 'असुरी अवगुणों' के**

बीच 'निर्णय' करने की विवेक बुद्धि नहीं रहती ।

इसके **ठीक विपरीत** प्रत्येक धर्म हमें **दया, क्षमा, मैत्री भाव, प्यार, सेवा आदि दैवीय गुणों के लिए प्रेरित करता है।**

प्रकाश की **अनुपस्थिति** का नाम **'अंधकार'** है। ईश्वरीय प्रकाश की अनुपस्थिति का नाम 'माया' है। माया के 'भ्रम भुलाव', **'अंध गुबार' में से अहम् उत्पन्न होता है।** जहां **'अहम्' का बोल बाला है**, वहां **दिव्य 'भावना' नहीं है। 'प्रकाश' तथा 'अंधकार'** एक दूसरे के **उल्ट तथा विरोधी हैं। अहम् का 'अहसास' तथा ईश्वरीय 'श्रद्धा भाव' भी एक दूसरे के उल्ट तथा विरोधी हैं।** अकाल पुरुष का अस्तित्व **'सच' तथा अटल है।**

अहम् का कोई अस्तित्व नहीं है, यह केवल **मन का 'भ्रम भुलाव' है।**

दूसरे शब्दों में, **'अज्ञानता रूपी माया' ने 'जीव' को जन्मों जन्मों से 'अहम्' की 'अफीम' के नशे में 'सुला' दिया है।**

तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ।। (पृ. 920)

समस्त मानसिक 'रोगों' का मूल कारण 'परमेश्वर' को 'भूलना' या विमुख होना ही है।

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ।।
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ।। (पृ. 135)

तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ।। (पृ. 383)

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ।। (पृ. 702)

यह **अहम् का रोग,** केवल साधारण जनता को ही नहीं लगा हुआ, अपितु धार्मिक श्रेणियों को भी **तगड़ा चिपटा हुआ है।**

अन्तर यह है कि साधारण जनता तो **मोटी स्थूल 'अहम्' की शिकार है,** परन्तु **धार्मिक श्रेणी का अहम् 'सूक्ष्म' होता है।**

लोहे के मोटे जंजीर तोड़ने तो सरल हैं, परन्तु दिमागी चतुराई, उक्तियाँ युक्तियाँ, फिलोस्फियों के **सूक्ष्म रेशमी फँदों से मुक्ति पाना अति कठिन है।**

'धर्म' के प्रचार के लिए, पहले **अपने अंदर ही दैवीय गुणों को धारण**

करने तथा कमाने की आवश्यकता है । कमाई किए बिना, फोकट साधनों का प्रचार करना हास्यप्रद 'पाखण्ड' है।

अवर उपदेसै आपि न करै ।।
आवत जावत जनमै मरै ।। (पृ. 269)
उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ।। (पृ. 380)

साधा हुआ 'व्यक्तिगत जीवन' ही प्रचार का अत्यन्त प्रभावशाली तरीका है।

इसी कारण गुरबाणी अनुसार, दूसरों को उपदेश देने से पहले, **अपने ही मन को समझाने का ताकीदी हुकुम है।**

जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ।।
तिस की सीख तरै संसारु ।। (पृ. 269)

प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ।।
राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ।। (पृ. 381)

सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ।।
जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ।। (पृ. 491)

आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ।।
सुनत कहत **रहत गति पावहु ।।** (पृ. 289)

गुरू नानक साहिब ने नौखण्ड पृथ्वी में **'विश्व धर्म'** या 'आई पंथी सगल जमाती' का प्रचार करके, एक अनुपम उदाहरण स्थापित किया।

इस **'सर्वज्ञ धर्म' की विशेषता** यह है कि यह **किसी को अपना धर्म त्यागने के लिए नहीं कहता,** अपितु अपने धर्म में ही विचरण करके — **वैवीय गुण धारण करने की प्रेरणा देता है।**

इसी लिए गुरू नानक साहिब ने —

मुसलमान	को	सच्चा मुसलमान
हिन्दु	को	सच्चा हिन्दु
वैष्णव	को	सच्चा वैष्णव

योगी	को	सच्चा योगी
पंडित	को	सच्चा पंडित

बनने की प्रेरणा दी है। यह सच्चाई निम्नलिखित गुरबाणी की पंक्तियों में प्रकट होती है

मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ।।
सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ।।
करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ।।
तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ।। (पृ. 140 41)

कंठे माला जिहवा रामु ।।
सहंस नामु लै लै करउ सलामु ।।
कहत कबीर राम गुन गावउ ।।
हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ।। (पृ. 479)

सो मुलां जो मन सिउ लरै ।।
गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ।।
काल पुरख का मरदै मानु ।।
तिसु मुला कउ सदा सलामु ।। (पृ. 1159&1160)

एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि कीआ ।।
सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ।। (पृ. 940)

मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ।।
सभ ऊपरि होवत किरपाल ।।
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ।।
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ।।
भगउती भगवंत भगति का रंगु ।।
सगल तिआगै दुसट का संगु ।।
मन ते बिनसै सगला भरमु ।।
करि पूजै सगल पारब्रहमु ।।

साधसंगि पापा मलु खोवै ।।
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ।। ....
सो पंडितु जो मनु परबोधै ।।
राम नामु आतम महि सोधै ।। (पृ. 274)

इस **विश्व धर्म** की सर्वज्ञता का **प्रमाण** यह है कि इस में —

1. परमात्मा के **सभी प्रचलित नामों को सत्कार दिया गया है** —

   सिरु नानक लोका पाव है ।। बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ।। (पृ. 1168)

2. **अनेक धर्मों** के भक्तों, महापुरुषों के **भिन्न-भिन्न बोलियों में रचे गये, ईश्वरीय 'कलाम' को सदैव के लिए गुरू ग्रन्थ साहिब में सम्मानित किया गया है।**

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ।।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउनु भले को मंदे ।। (पृ. 1349)

हिंदू तुरक का साहिबु एक ।।
कह करै मुलां कह करै सेख।। (पृ. 1158)

इसलिए गुरू नानक साहिब के चलाये हुए 'विश्व-धर्म' में 'मज़हबी तअस्सुब' के लिए कोई गुंजाइश नहीं है, तथा **गुरबाणी को मानने वालों को अन्य धर्मों के पैरोकारों से सहनशीलता तथा मित्रता का बरताव करना चाहिए।**

परन्तु खेद की बात है कि गुरबाणी की **आन्तरिक भावना** से अन्जान तथा विमुख हो कर, हम गुरू नानक के **'नाम-लेने वाले'** तथा **गुरबाणी के उपासक** 'कहलाने' वाले, **अन्य धर्मों** तथा **अपने ही सम्प्रदायों के साथ, संकीर्णता वाला बरताव करते हैं ।**

आत्मिक अज्ञानता के भ्रम-भुलाव में से ही 'द्वैत-भाव' उत्पन्न होता है, जिस द्वारा हम —

ईश्वरीय एकता तथा
विश्व धर्म की

को भूल जाते हैं।

इस **'द्वैत-भाव' का भ्रम** ही 'मज़हबी तअस्सुब' की अग्नि का **मूल कारण बनता है।**

इस वास्तविकता को गुरबाणी में यूँ दर्शाया गया है —

इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ।।
इहु मनु **जलिआ दूजै दोइ ।।** (पृ. 1176)

बड़े दुख की बात है कि इस **'द्वैत भाव' वाली 'मज़हबी संकीर्णता' की अग्नि, 'धर्मों' तथा 'धर्म स्थानों' में भी लगी हुई है ।**

इतना ही बस नहीं, 'सर्व-साँझी गुरबाणी' के **उपासक तथा धार्मिक संस्थाएँ भी, 'द्वैत-भाव' की अग्नि की चपेट में** आ गयी हैं।

'मज़हबी कट्टरता' के भयानक तथा जहरीले परिणामों का निचोड़ यूँ ब्यान किया जा सकता है ।

अहम् के प्रभाव में हम —

1. अपने मन को धर्म के पीछे लगाने की **अपेक्षा,** अपनी उक्तियाँ-युक्तियाँ, चतुराई द्वारा धर्म की सही विचारधारा को **तोड़-मरोड़ कर, अपने मन की रुचियों या रंगत अनुसार 'घड़' कर** निजी, मायिकी, सामाजिक, राजनैतिक **स्वार्थ या भावुक निश्चय** (personal idiosyncrasies) **के लिए प्रयोग करते हैं ।**
2. इस प्रकार कुछ समय पश्चात, धर्म के वास्तविक आत्मिक **गुप्त 'भेद'** तथा **तत् अलोप हो जाते हैं** या भुला दिये जाते हैं तथा हमारे पल्ले केवल **धर्म के स्वयं रचे हुए फोकट सिद्धान्त तथा विचारधारा ही रह जाती** है।
3. ये हमारी विचारधारा या निश्चय, अपने-अपने, भिन्न-भिन्न होने के कारण, **अलग-अलग 'सम्प्रदाय' बन जाते हैं,** जो अपने आप को दूसरों से **श्रेष्ठ तथा 'असली' होने का दावा करते हैं ।**
4. इन सम्प्रदायों के सिद्धान्त, विचारधारा, मर्यादा, रीति, लिबास आदि **भिन्न-भिन्न होने के कारण,** इन सम्प्रदायों में **परस्पर टकराव, झगड़ा तथा 'तअस्सुब'**

अनिवार्य है ।

5. इन सम्प्रदायों का मूल 'इष्ट' तथा 'उपदेश' **एक ही स्रोत से होने के बावजूद भी,** हम अपनी-अपनी **सूक्ष्म अहम् के प्रभाव में, मूल 'तत्त्व-विचारधारा',** 'मर्यादा' तथा पहनावे को अपने **मन की रंगत अनुसार बदल देते हैं, जो फिरकापरस्ती का कारण बनता है ।**

6. इस प्रकार हम अहम् के भ्रम-भुलाव के आधार पर 'मज़हब' या 'धर्म' के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों में **'तअस्सुब' तथा नफरत बढ़ा रहे हैं।**

7. मलिन बुद्धि के कारण हम **मज़हबी कट्टरता** के भयानक तथा **जहरीले परिणामों से बेपरवाह** या जान-बूझ कर **'मस्त'** हो जाते हैं।

8. इसी कारण हम दूसरे धर्मों की **उपेक्षा तथा निंदा करते हैं।**
निर्दोष प्राणियों को दुख देकर अत्यन्त **पाप कमाते हैं** तथा 'जो मैं किआ सो मैं पाइआ' अनुसार स्वयं दुखी होते हैं तथा यम के वश पड़ जाते हैं।

9. हम अपने धर्म को उच्च या श्रेष्ठ दर्शाने या फैलाने के लिए, **तअस्सुबमें गलतान होते हैं** परन्तु वास्तव में **'तअस्सुब' द्वारा,** हम अपने ही धर्म का निरादर करते हैं, तथा स्वयं ही **अपने धर्म के लिए विरोध पैदा करते हैं।**

10. यह कितनी व्यंग्यमयी (ironical) बात है कि जिस कुकर्म, अत्याचार, पाप की, **धर्म में निंदा या उपेक्षा की गयी है,** वही कुकर्म अत्याचार, पाप, **धार्मिक कट्टरता के पर्दे में, उचित, नेक, शुभ अथवा पुन्य समझे जाते हैं।**

11. यह 'मज़हबी तअस्सुब' का मूल **अवगुण**, केवल **इन्सानों तक सीमित है।** शेष चौरासी लारव योनियाँ इस इन्सानी **जहरीले रोग से आज़ाद या मुक्त हैं** — क्योंकि उन सब का **मज़हब एक मात्र 'हुकुम' है** — जिस का वे ईमानदारी से — अनजाने तथा सहज स्वभाव ही **पालन कर रहे हैं।**

12. एक ओर तो हम धर्म के फैलाव के लिए मैत्री-भाव, प्यार, दया, एकता, सेवा आदि दैवीय गुणों का **प्रचार करते हैं** तथा दूसरी ओर **'मज़हबी तअस्सुब ' के पागलपन में** ईर्ष्या, द्वेष, मार-धाड़, **जोर-जुल्म के बरताव में बड़े उत्साह तथा लगन से प्रवृत होते हैं।**

यह अत्यन्त हास्यप्रद, मज़ाक तथा पारवण्ड है।

13. सभी धर्म, दुनिया की ईर्ष्या, द्वैत की 'तपिश' में **शीतलता लाने के लिए रचे गये थे,** परन्तु हमने इन्हे **तअस्सुब की आग लगा दी है।** अब, जब समस्त धर्म ही भयानक **अग्निकुण्ड बने हुए हैं,** तब दुनिया की मानसिक आग को कौन बुझाये?

14. इसी प्रकार **मज़हबी तअस्सुब जैसी गम्भीर तथा खतरनाक ज्वाला** को शांत करने के लिए, मज़हबी कर्म काण्ड **कारगर नहीं हो सकते,** क्योंकि ये कर्मकाण्ड ही मज़हबी तअस्सुब की अग्नि का **'ईंधन'** बन जाते हैं, जिससे ज्वाला **और अधिक भयानक रूप धारण कर लेती है।**

15. 'मज़हबी तअस्सुब' के रोग का इलाज या अगनकुंड को शांत करने की गुरबाणी में एक मात्र दवादारू **अमोलक शीतल 'नाम' ही बतलायी गयी है।**

मन मेरे गहु हरि नाम का ओला ।।
तुझै न लागै ताता झोला ।। (पृ. 179)

हमारा बरताव गुरबाणी के निम्नलिखित उपदेश अनुसार होना चाहिए —

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ।। (पृ. 1299)